श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेद्व्यासप्रणीत

महाभारत 🗎 🛵 🗁 🗸

(तृतीय खण्ड) 🥍 🤧

[उद्योगपर्व और भीष्मपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)

3 of 6



ग्रिक्स मेरा, जीररनमुद

अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

ा औरिः ॥ उद्योगपर्व

(सेनोद्योगपर्व) १८-इन्द्रका स्वर्गमें जाकर अपने राज्य	
१-राजा विराटकी सभामें भगवान् श्रीकृष्णका करनाः शल्यका युधिष्ठिरको आध	
भाषण ••• ः २०३९ और उनसे विदा लेकर दुर्योधनके र	
२-बलरामजीका भाषण ''' २०४२ १९-युधिष्ठिर और दुर्योधनके यहाँ सहाय	ाताके लिये
३-सात्यिकिके बीरोचित उद्गारः ' २०४३ आयी हुई सेनाओंका संक्षिप्त विवरः	ण २०८३
४-राजा द्वपदकी सम्मति २०४५ (संजययानपर्य)	
५-भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकागमनः विराट और २०-द्रपदके पुरोहितका कौरवसभामें भा	पण २०८६
द्रुपदके संदेशसे राजाओंका पाण्डवपशकी ओरसे २१-भीष्मके द्वारा द्रपदके परोहितक	
युद्धके लिये आगमन २०४७ समर्थन करते हुए अर्जुनकी प्रशं	
६-दुपदका पुरोहितको दौत्यकर्मके लिये अनुमति इसके विरुद्ध कर्णके आक्षेपपूर्ण व	
देना तथा पुरोहितका हस्तिनापुरको प्रस्थान २०४८ धृतराष्ट्रद्वारा भीध्मकी बातका सम	
Substitution and the substitut	
ुद् पूर्वम वन्नामव मरम निर्म	
र मामका वर्षी पाने प्राचाने स्थान को नहें न	
444 400 64 40 040 440	पाण्डवाक
	E(0) (-30)
९-इन्द्रके द्वारा त्रिशिराका वधः बृत्रासुरकी उत्पत्तिः पूछना एवं युधिष्ठिरका संजयसे व	
उसके साथ इन्द्रका युद्ध तथा देवताओंकी कुशल-समाचार पूछते हुए उससे पराजय: :: २०५७ प्रश्न करना :::	सारगभित
पराजय २०५७ प्रश्न करना १०-इन्द्रसहित देवताओंका भगवान् विष्णुकी शरणमें २४-संजयका युधिष्ठिरको उनके प्रश्नोंका	
जाना और इन्द्रका उनके आशानुसार वृत्रासुरसे हुए उन्हें राजा धृतराष्ट्रका संदेश संधि करके अवसर पाकर उसे मारना एवं प्रतिशा करना	
संधि करके अवसर पाकर उसे मारना एवं प्रतिशा करना ब्रह्महत्याके भयसे जलमें छिपना २०६२ २५—संजयका युधिष्ठिरकी धृतराष्ट्रका संदे	२०९७
15 たっぱんだけはより 1970年には、1970年に	
११-देवताओं तथा ऋषियोंके अनुरोधसे राजा एवं अपनी ओरसे भी शान्तिके वि नहपका इन्द्रके पदपर अभिषक्त होना एवं करना	ड्य प्रायना २० ९ ८
नहुपका इन्द्रके पदपर अभिषिक्त होना एवं करना ''' काम-भोगमें आसक्त होना और चिन्तामें पड़ी २६—युधिष्ठिरका संजयको इन्द्रप्रस्थ लौ	
हुई इन्द्राणीको बृहस्पतिका आश्वासन ः २०६६ शान्ति होना सम्भव बतलाना	
	5803
समयका जवाय मार्गका एवं जाना ५०६८ २/-संजयको स्विधिरका उत्तर	२१०६
१३-नहुषका इन्द्राणाका कुछ कालका अवाध दनाः २९-संजयकी वातींका प्रत्यत्तर देते हए	औक्र ण्णका
इन्द्रका ब्रह्महत्याम उदार तथा शचाद्वारा - उसे धृतराष्ट्रके लिये चेतावनी देना	
रात्रिदेवीकी उपासना " २०७१ ३०-संजयकी विदाई तथा यधिष्टिरका सं	देश २११५
१४-उपश्रुति देवीको सहायतासे इन्द्राणीको इन्द्रसे ३१-यधिष्टिरका मख्य-मख्य करुवंशि	
भट २०७३ संदेश	2850
१५-इन्द्रकी आज्ञासे इन्द्राणिके अनुरोधपर नहुषका ३२-अर्जुनद्वारा कौरवोंके लिये संदे	हा देनाः
ऋषियोंको अपना बाहन बनाना तथा संजयका हस्तिनापुर जा धृतराष्ट्रसे	
बृहस्पति और अभिका संवाद ''' २०७४ उन्हें युधिष्ठिरका कुशल-समाचार	कहकर
१६-बृहस्पतिद्वारा अग्नि और इन्द्रका स्तयन तथा धृतराष्ट्रके कार्यकी निन्दा करना	5856
बृहस्पति एवं लोकपालींकी इन्द्रसे वातचीत · • २०७७ (प्रजागरपर्व)	
१७-अगस्त्यजीका इन्द्रसे नहुषके पतनका बृत्तान्त ३३-धृतराष्ट्र-विदुर-संवाद	585€
वताना २०८० ३४-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीके नीतियुक्त	वचन *** २१३६

३५-बिदुरके द्वारा केशिनीके लिये मुधन्याके साथ	५६-संजयद्वारा अर्जुन्के ध्वज एवं अश्वीका तथा
विरोचनके विवादका वर्णन करते हुए	युधिष्ठिर आदिके घोड़ोंका वर्णन " २२२७
भृतराष्ट्रको धर्मोपदेश २१४२	५७-संजयद्वारा पाण्डवींकी युद्धविषयक तैयारीका
३६-दत्तात्रेय और साध्य देवताओंके संवादका	वर्णनः धृतराष्ट्रका विलापः दुर्योधनद्वारा
उल्लेख करके महाकुलीन लोगोंका लक्षण	अपनी प्रबलताका प्रतिपादनः धृतराष्ट्रका
बतलाते हुए विदुरका धृतराष्ट्रको समझाना *** २१४८	उसपर अविश्वास तथा संजयद्वारा धृष्टयुम्नकी
३७-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका हितोपदेश *** २१५४	शक्ति एवं संदेशका कथन २२२९
३८-विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश *** २१६०	५८-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको संधिके लिये
३९-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश २१६३	समझानाः दुर्योधनका अहंकारपूर्वक पाण्डवी-
४०-धर्मकी महत्ताका प्रतिपादन तथा ब्राह्मण आदि	से युद्ध करनेका ही निश्चय तथा धृतराष्ट्रका
चारों वर्णोंके धर्मका संक्षिप्त वर्णन २१६९	अन्य योद्धाओंको युद्धसे भय दिखाना २२३३
(सनत्सुजातपर्व)	५९-संजयका धृतराष्ट्रके पृछनेपर उन्हें श्रीकृष्ण
४१-विदुरजीके द्वारा स्मरण करनेपर आये हुए	
सनत्सुजात ऋषिसे धृतराष्ट्रको उपदेश देनेके	और अर्जुनके अन्तःपुरमें कहे हुए संदेश सुनाना
लिये उनकी प्रार्थना २१७२	६०-धृतराष्ट्रके द्वारा कौरव-पाण्डवीकी शक्तिका
४२-सनत्सुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रश्नी-	तुलनात्मक वर्णन २२३८ ६१-दुर्योधनद्वारा आत्मप्रशंसा २२४०
४२-सनत्सुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रश्नीं- का उत्तर् : २१७३	
४३-त्रहाशानमे उपयोगी मौनः तपः त्यागः अप्रमाद	६२-कर्णकी आत्मप्रशंसाः भीष्मके द्वारा उसपूर
एवं दम आदिके लक्षण तथा मदादि दोषीका	आक्षेपः कर्णका सभा त्यागकर जाना और
एवं दम आदिके लक्षण तथा मदादि दोर्पोका निरूपण " २१७८ ४४-ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मका निरूपण " २१८३	भाष्मका उसके प्रांत पुनः आक्षपयुक्त बचन
४५-गुण-दोवोंके लक्षणींका वर्णन और ब्रह्मविद्याका	भीष्मका उसके प्रति पुनः आक्षेपयुक्तः वचन कहना :: २२४२ ६३-दुर्योधनद्वारा अपने पक्षकी प्रबलताका वर्णन
प्रतिपादन " २१८६	करना और विदुरका दमकी महिमा बताना २२४४
प्रातपादन २१८६ ४६-परमात्माके खरूपका वर्णन और योगीजनोंके	६४-विदुरका कैंदुम्बिक कल्ह्से हानि बताते हुए
द्वारा उनके साक्षात्कारका प्रतिपादन २१८८	भृतराष्ट्रको संभिक्षी सलाइ देना २२४६
द्वारा उनक साञ्चात्कारका प्रावधारन ५,५८८ (यानसंधिपर्व)	६५-पृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना " २२४८
४७-पाण्डवींके यहाँसे लीटे हुए संजयका कौरव-	६६-संजयका धृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना २२५०
सभामें आगमन ःः २१९₹	६७-पृतराष्ट्रके पास व्यास और गान्धारीका
४८-संजयका कौरवसभामें अर्जुनका संदेश सुनाना २१९४	आगमन तथा व्यासजीका संजयको श्रीकृष्ण
४९-भीष्मका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते	और अर्जुनके सम्बन्धमें कुछ कहनेका आदेश २२५%
हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बताना	
एवं कर्णपर आक्षेप करना, कर्णकी आत्म-	६८-संजयका धृतराष्ट्रको भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा बतलाना · · · २२५२
प्रशंसा, भीष्मके द्वारा उसका पुनः उपहास	६९-संजयका भृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण-प्राप्ति एवं
पर्व दोणाचार्यदारा भीष्मजीके कथनका	तत्त्वज्ञानका साधन बताना *** २२५३
एवं द्रोणाचार्यद्वारा भीष्मजीके कथनका अनुमोदन २२०६	७०-भगवान् श्रीकृष्णके विभिन्न नामोंकी
५०-संजयदारा युधिष्ठिरके प्रधान सहायकोंका वर्णन २२१०	ब्युत्पत्तियोंका कथन २२५५
५१-भीमसेनके पराक्रमसे डरे हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१४	७१-धृतराष्ट्रके द्वारा भगवद्-गुणगान *** २२५७
५२-धृतराष्ट्रद्वारा अर्जुनसे प्राप्त होनेवाले भयका	
वर्णन २२१८	(भगवद्यानपर्व)
५३-कौरवसभामें धृतराष्ट्रका युद्धसे भय दिखाकर	७२-युधिष्ठरका श्रीकृष्णसे अपना अभिप्राय
शान्तिके लिये प्रस्ताव करना " २२२०	निवेदन करनाः श्रीकृष्णका शान्तिदूत वनकर
५४-संजयका धृतराष्ट्रको उनके दोष बताते हुए	कौरवसभामें जानेके लिये उद्यत होना और
दुर्वोधनपर शासन करनेकी सलाइ देना २२२१	इस विषयमें उन दोनोंका वार्तालाप " २२५८
५५-धृतराष्ट्रको धैर्य देते हुए दुर्योधनद्वारा अपने	७३-श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको युद्धके लिये
ं उत्कर्ष और पाण्डबॅकि अपकर्षका वर्णन … २२२३	प्रोत्साइन देना २२६५ .

७४-भीमसेनका शान्तिविषयक प्रस्ताव २२६	८ ९५-कौरवसभामें श्रीकृष्णका प्रभावशाली भाषण २३१९
७५-श्रीकृष्णका भीमसेनको उत्तेजित करना २२७	
७६-भीमसेनका उत्तर २२७	
७७-श्रीकृष्णका भीमसेनको आश्वासन देना २२७	가능하는
७८-अर्जुनका कथन · · · २२७	
७९-अक्रिणका अर्जुनको उत्तर देना " २२७	- 10 The Control of C
८०-नकुलका निवेदन २२७	
८१-युद्धके लिये सहदेव तथा सात्यिककी सम्मति	निमित्त नारदजीके साथ वरुणलोकमें भ्रमण
और समस्त योद्धाओंका समर्थन *** २२५	 करते हुए अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ देखना २३२९
८२-द्रीपदीका श्रीकृष्णसे अपना दुःख सुनाना	९९-नारदजीके द्वारा पाताल्लोकका प्रदर्शन २३३१
और श्रीकृष्णका उसे आश्वासन देना २२०	८० १००-हिरण्यपुरका दिग्दर्शन और वर्णन २३३२
८३-श्रीकृष्णका इस्तिनापुरको प्रस्थानः युधिष्ठिर-	१०१गरुडलोक तथा गरुडकी संतानीका वर्णन " २३३४
का माता कुन्ती एवं कौरवोंके लिये संदेश तथा	१०२-सुरभि और उसकी संतानोंके साथ रसातलके
श्रीकृष्णको मार्गमें दिव्य महर्पियोंका दर्शन २२०	
८४-मार्गके ग्रुभाग्रुभ शकुनींका वर्णन तथा	१०२—नागलोकके नागोंका वर्णन और मातलिका
मार्गमें लोगोंद्वारा सत्कार पाते हुए श्रीकृष्ण-	नागकुमार सुमुखके साथ अपनी कन्याको
का वृकस्थल पहुँचकर वहाँ विश्राम करना २२८	९ व्याहनेका निश्चय २३३६
८५-दुर्योधनका धृतराष्ट्र आदिकी अनुमतिवे	१०४-नारदजीका नागराज आर्यकके सम्मुख सुमुखके
श्रीकृष्णके स्वागत-सत्कारके लिये मार्गमें	साथ मातलिकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव
्र विश्राम-स्थान बनवाना २२९	१ एवं मातलिका नारदजीः सुमुख एवं आर्यक-
८६-धृतराष्ट्रका भगवान् श्रीकृष्णकी अगवानी	के साथ इन्द्रके पास आकर उनके द्वारा
करके उन्हें भेंट देने एवं दुःशासनके महलमें	सुमुखको दीर्घायु प्रदान कराना तथा सुमुख-
ठहरानेका विचार प्रकट करना २२९	^{१३} गुणकेशी-विवाह · · · २३३८
८७-विदुरका धृतराष्ट्रको श्रीकृष्णकी आज्ञाका	१०५-भगवान विधाके द्वारा सहकार सर्वेशक्त
पालन करनेके लिये समझाना " २२९	तथा दुर्योधनद्वारा कण्वमुनिके उपदेशकी अवहेलना २३४०
८८-दुर्योधनका श्रीकृष्णके विषयमें अपने विचार कहना एवं उसकी कुमन्त्रणासे कुपित हो	अवहेलना २३४०
भीष्मजीका सभासे उठ जाना " २२९	१०६-नारदजीका दुर्योधनको समझाते हुए
८९-अक्रिध्णका स्वागतः भूतराष्ट्र तथा विदरके	५५ धर्मराजके द्वारा विश्वामित्रजीकी परीक्षा तथा
८९-श्रीकृष्णका स्वागतः भृतराष्ट्र तथा विदुरके वर्रोपर उनका आतिच्य	गालवके विश्वामित्रसे गुरुदक्षिणा माँगनेके
९०-श्रीकृष्णका कुन्तीके समीप जाना एवं	राज्य ६०का सनाम १५३३
्र अधिष्ठिरका कुशल-समाचार पूछकर अपने	१०७-गालक्की चिन्ता और गरहका आकर उन्हें आश्वासन देना २३४५
दुःखींका स्मरण करके विलाप करती हुई	१०८-गरहका गालवसे पर्व दिशाका वर्णन करना २३४६
कुन्तीको आश्वासन देना	° १०९-दक्षिण दिशाका वर्णन
११-श्रीकृष्णका दुर्योधनके घर जाना एवं उसके	११०-पश्चिम दिशाका वर्णन *** २३४९
निमन्त्रणको अस्वीकार करके विदुरजीके धरपर भोजन करना २३०	
९१-विदुरजीका धृतराष्ट्रपुत्रोकी दुर्भावना वताकर	११२गरुइकी पीठपर बैठकर पूर्व दिशाकी ओर
अक्रिष्णको उनके कौरवसभामें जानेका	जाते हुए गालवका उनके वेगले व्याकुल होना २३५३
अनौचित्य बतलाना ''' २३३	० ११३-ऋषभ पर्वतके शिखरपर महर्षि गालव और
९३-श्रीकृष्णका कौरव-पाण्डवीमें संधिस्थापनके	गरुइकी तपस्तिनी शाण्डिलीसे भेट तथा
प्रयत्नका औचित्य बताना	
९४-दुर्योधन एवं शकुनिके द्वारा बुलाये जानेपर	विषयमें परस्पर विचार " २३५४
भगवान् श्रीकृष्णका रथपर बैठकर प्रस्थान एवं कौरवसभामें प्रवेश और स्वागतके	११४-गरङ और गालवका राजा ययातिके यहाँ जाकर गुरुको देनेके लिये स्यामकर्ण धोड़ोंकी
दश्चात् आसनग्रहण २३१	
141	थ याचना करना २३५६

११५—राजा ययातिका गालवको अपनी कन्या देना और गालवका उसे लेकर अयोध्या-नरेशके	१३०-दुर्योधनके षड्यन्त्रका सात्यकिद्वारा भंडा• फोड़ः श्रीकृष्णकी सिंहगर्जना तथा धृतराष्ट्र
यहाँ जाना २३५८	और विदुरका दुर्योधनको पुनः स मझाना २३८९
११६-हर्यश्वका दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर ययाति-	१३१-भगवान् श्रीकृष्णका विश्वरूप दर्शन कराकर
कन्याके गर्मसे वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न	कौरवसभासे प्रस्थान २३९३
करना और गालवका इस कन्याके साथ	१३२-श्रीकृष्णके पूछनेपर कुन्तीका उन्हें पाण्डवींसे
वहाँसे प्रस्थान २३५९	कहनेके लिये संदेश देना २३९५
११७-दिवोदासका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे	१३३-कुन्तीके द्वारा विदुलोपाल्यानका आरम्भः
पतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न करना " २३६१	विदुलाका रणभूमि से भागकर आपे हुए
११८-उद्यीनरका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे	अपने पुत्रको कड़ी फटकार देकर पुनः
शिवि नामक पुत्र उत्पन्न करनाः गालवका	युद्धके लिये उत्साहित करना "२३९८ १३४-विदुलाका अपने पुत्रको सुद्धके लिये
उस कन्याको साथ लेकर जाना और मार्गमें	उत्पादित करना ''' २४०१
गरुङ्का दर्शन करना २३६२	उत्साहित करना २४०१ १३५-विदुला और उसके पुत्रका संवाद—विदुलाके
११९-गालवका छः सौ घोड़ोंके साथ माधवीको	द्वारा कार्यमें सफलता प्राप्त करने तथा
विश्वामित्रजीकी सेवामें देना और उनके द्वारा	रात्रुवशीकरणके उपायोंका निर्देश · · · २४०४
उसके गर्भसे अष्टक नामक पुत्रकी उत्पत्ति	१३६-विदुलाके उपदेशसे उसके पुत्रका सुद्धके
होनेके बाद उस कन्याको ययातिके यहाँ	
लौटा देना २३६४	लिये उद्यत होना २४०७ १३७-कुन्तीका पाण्डवींके लिये संदेश देना और
१२०-माधवीका बनमें जाकर तप करना तथा	श्रीकृष्णका उनसे विदा लेकर उपप्लब्ध नगरमें जाना २४०९
ययातिका स्वर्गमें जाकर मुखभोगके पश्चात्	नगरम जाना ''' २४०९
मोहवश तेजोहीन होना २३६५	१३८-भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको समझाना २४११
१२१-ययातिका स्वर्गलोकसे पतन और उनके	१३९-भीष्मसे वार्तालाप आरम्भ करके द्रोणाचार्यका
दौहित्रों) पुत्री तथा गालव मुनिका उन्हें	दुर्योधनको पुनः संधिके लिये समझाना " २४१३
पुनः स्वर्गलोकमें पहुँचानेके लिये अपना-	१४०-भगवान् श्रीकृष्णका कर्णको पाण्डवपक्षमें आ जानेके लिये समझाना २४१५
अपना पुण्य देनेके लिये उद्यत होना २३६७	आ जानक छिप समझाना १४९५
१२२-सत्सङ्ग एवं दौहित्रींके पुण्यदानसे ययातिका	१४१-कर्णका दुर्योधनके पक्षमें रहनेके निश्चित
पुनः स्वर्गारोहण २३६९	विचारका प्रतिपादन करते हुए समरयक्तके रूपकका वर्णन करना २४१६
१२३-स्वर्गलोकमें ययातिका स्वागतः ययातिके	१४२-भगवान् श्रीकृष्णका कर्णसे पाण्डवपक्षकी
पृछनेपर ब्रह्माजीका अभिमानको ही पतनका	निश्चित विजयका प्रतिपादन २४२०
कारण बताना तथा नारदजीका दुर्योधनको	१४३-कणंके द्वारा पाण्डवींकी विजय और कौरवींकी
समझाना २३७०	पराजय स्चित करनेवाले लक्षणीं एवं अपने
१२४-धृतराष्ट्रके अनुरोधसे भगवान् श्रीकृष्णका	स्वप्रका वर्णन २४२१
दुर्योधनको समझाना २३७२	१४४-विदुरकी बात सुनकर युद्धके भावी दुष्परि-
१२५-भीष्मः द्रोणः विदुर और धृतराष्ट्रका	णामसे व्यथित हुई कुन्तीका बहुत सोच-
दुर्योधनको समझाना २३७७	विचारके वाद कर्णके पास जाना *** २४२५
१२६-भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको पुनः समझाना २३७९	१४५-कुन्तीका कर्णको अपना प्रथम पुत्र बताकर
१२७-श्रीकृष्णको दुर्योधनका उत्तर, उसका पाण्डवी-	उससे पाण्डवपक्षमें मिल जानेका अनुरोध २४२७
- 1 - 4 5 1 - 2 T 2 1 1 1 2 1 1 1 2 1 1 1 2 1 1 1 2 1 1 1 1 2 1	र १४६-कर्णका कुन्तीको उत्तर तथा अर्जुनको छोडकर
को राज्य न देनेका निश्चय अस्ति । २३८०	शेष चारों पाण्डवींको न मारनेकी प्रविशा " २४२८
१२८-श्रीकृष्णका दुर्योधनको फटकारना और उसे	१४७-युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्णका कौरव-सभामें
कुपित होकर सभासे जाते देख उसे कैंद करनेकी सलाह देना ··· २१८२	व्यक्त किये हुए भीष्मजीके वचन सुनाना २४३०
	१४८-द्रोणाचार्यः विदुर तथा गान्धारीके युक्तियुक्
१२९-धृतराष्ट्रका गान्धारीको बुलाना और उसका दुर्योधनको समझाना ''' २३८५	एवं महत्त्वपूर्ण वचनोंका भगवान् श्रीकृष्णके
दुर्योधनको समझाना २३८५	द्वारा कथन २४३३

भेरमीतिके प्रवीमार्की अन्यस्कता बताकर दण्डके प्रवीमार्की अन्यस्कता बताकर दण्डके प्रवीमार जोर देना	१४९-दुर्योधनके प्रति धृतराष्ट्रके युक्तिसंगत वचन- पाण्डवोंको आधा राज्य देनेके लिये आदेश*** २४३६	१६४-पाण्डवसेनाका युद्धके मैदानमें जाना और धृष्टसुम्नके द्वारा योद्धाओंकी अपने-अपने योग्य
पश्चितिक प्रयोगपको असफलता बताकर दण्डके प्रयोगपको जोर देना (सेन्यनिर्पाणपर्व) १५१-वाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव तथा पाण्डवसेनाका कुरुक्षेक्रमें प्रवेश (१५०-क्रीत्वपक्षके रिययोंका परिचय देना र १५०१ १५१-वुक्केश्वममें पाण्डवसेनाका पड़ाव तथा शिवर-विमाण पर्व असे स्थान सेनापतिका पड़ाव तथा शिवर-विमाण पर्व असे असिरियोंका परिचय सेना र १५०१ १५१-कुरुक्केश्वममें पाण्डवसेनाका पड़ाव तथा शिवर-विमाण पर्व असे स्थान को सुनाका सेनाको सुनाका होने और असिरियोंका वर्णन कर्ण और भीष्मका रोपपुर्वक संवाद तथा हुर्योधनका सेनाको सुनाका लेव्य आशा देना तथा विमाजन असे सुम्बेखिक कर्नक्षके विथ्य आशा देना तथा विपयमें पुश्चित्रका सेनापतिका अपने समयोगि अस्ति स्थान असिरियोंका वर्णन कर्ण और भीष्मका रोपपुर्वक संवाद तथा हुर्योधनका सार्वे स्थान असिरियोंका वर्णन करने वियो और असिरियोंका वर्णन करने शिवर असिरियोंका वर्णन करने सिर्य आसिरिका एवं उनकी महिमाका वर्णन स्थान सुर्वे असिरियोंका वर्णन करने शिवर आसिरिका एवं उनकी महिमाका वर्णन करने शिवर आसिरिका एवं उनकी महिमाका वर्णन करने शिवर असिरियोंका वर्णन करने स्थान हुर्योधनका स्थान सुर्वे असिरियांका वर्णन करने स्थान हुर्योधनके सुर्वे असिरियांका वर्णन करने स्थान हुर्योधनके सुर्वे असिरियांका वर्णन करने सुर्वे असिरियांका वर्णन करने हुर्योधनके सुर्वे असिरियांका वर्णन करने हुर्ये असिरियांका वर्णन करने हुर्योधनके सुर्वे अस्तर्या रूपपुर्व सुर्वे अस्तर्या सुर्ये अस्तर्या असिरियांका वर्णन करने हुर्ये असिरियांका वर्णन सुर्वे असिरियांका वर्णन करने हुर्ये असिरियांका वर्णन करने हुर्ये अस्तर्या सुर्ये अस्तर्या असिरियांका वर्णन सुर्ये असिरियांका वर्णन सुर्ये असिरियांका वर्णन सुर्ये अस्तर्या असिरियांका वर्णन सुर्ये असिरियांका सुर्ये असिरियांका		
दण्डके प्रयोगपर जोर देना (सैन्यनिर्याणपर्च) १५१-पाण्डवपशके सेनापतिका चुनाव तथा पाण्डवसेनाका कुरुकेश्वमें प्रवेश पाण्डवसेनाका प्रवान तथा विविद्गिमाण पाण्डवसेनाका कुरुकेश्वमें प्रवेश पाण्डवसेनाका प्रवान तथा विविद्गिमाण पाण्डवसेनाका सुरुकेश सेनाका सेनाको सुरुकित होने और हिक्किर निमाण करनेके लिये आजा देना तथा सैनिकींकी रणयात्राको लिये तैयारी १४४-पुरिकेशक भगवान् अंग्रक्त विव्ययमें पूछनाः भगवान्का युद्धको ही कर्तक वताना तथा हस विषयमें पुधिष्ठिस्का संताप और अर्जुनदारा अष्ठिस्का संताप और अर्जुनदारा अष्ठिस्का संताप और अर्जुनदारा अभिकेश पर्वर अभिकेश पर्वर अभिकेश पर्वर अभिकेश पर्वान स्वान्य सर्वान स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया प्रवेश पर्वाव स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया प्रवेश स्वया अर्थेर १५५-पुर्वोधनके द्वारा भीभाजीका प्रधान-सेनापतिके पदर अभिकेश व्हुवहिविविहित वर्षामा स्वया पाण्डवीके अभिकेश पर्वर अभिकेश वहुवहिविविहित वर्षामा स्वया पाण्डवीके आगमन तथा पाण्डवीके विदा लेकर उनका तीर्थामाके लिये प्रथान पर्वत स्वया स्वया देने लिये संदेश ह्वारा केरा उत्तर पाकर लेट जाना १५५६-पुर्वोधनका उत्तरकहे हिने लिये संदेश ह्वारा स्वया भाजा आगमन तथा वाण्डवीके विदा लेकर उनके पास कानेके लिये प्रथान पर्वत प्रवेश स्वया संवाद पर्वत प्रवेश संवय संवय स्वया स्वया संवय स्वया स्वया संवय स्वया स्वया संवय स्वया संवय स्वया संवय स्वया संवय स्वया संवय स्वया संवय संवय संवय संवय संवय संवय संवय संवय		그렇게 요즘 스트로 이 맛있는 그리지만 가는 살길 맛있다면 가지 하고 있는 것이 없는 것이다. 그런 그런 그리
र्भर-पाण्डवपश्चेत से तेनापितका चुनाव तथा पाण्डवपेशक ते तेनापितका चुनाव तथा पाण्डवपेशक ते तेनापितका चुनाव तथा पाण्डवपेशका क्रत्मेक प्रवेश विद्या विद्या तथा विद्या करिक के त्रिया करिक किया करिक किया करिक किया करिक किया करिक किया करिक किया किया करिक किया करिक किया करिक किया किया करिक किया किया करिक किया किया करिक किया किया किया किया किया किया किया कि	दण्डके प्रयोगपर जोर देना २४३८	
१५१-चाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव तथा पाण्डवसेनाका कुकक्षेत्रमें प्रवेश	(सैन्यनियोणपर्च)	
पण्डबरेनाका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश		
रिश्च-कुरुक्षेत्रमं पाण्डवसेनाका पड़ाय तथा रिश्चिर-निर्माण " २४४४ रिड-व्हेंग्येनका सेनाको सुर्वात्रत होने और सिक्चर निर्माण करनेके लिये आजा देना वर्णमानका स्वात्रत राष्ट्रमानका सेनाको सुर्वात्रत होने और सिक्चर निर्माण करनेके लिये आजा देना सम्यान मिक्नेका राण्यात्राके लिये तैयारी २४४५ रि५-युविष्ठिरका भगवान् श्रीकृष्णके अपने सम्यानिक वर्णमानका युद्धको ही कर्तव्य वताना तथा इस विषयमं युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन "२४४० विष्यमं युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन "२४४० व्याप्ट विषयमं अधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन "२४४० व्याप्ट विषयमं अधिष्ठिरका संताप तथा विभाजन और प्रथक्तृथ्यक् अधीहिणवींके सेनापतियांका अभिषेक वरस अभिषेक और कुरुक्षेत्रमं पहुँचकर सिवर-निर्माण "२४४० व्याप्ट अभिष्ठिरके सारा अपने नेनापतियांका अभिषेक युद्धिक्षिरके सारा अपने नेनापतियांका अभिषेक युद्धिक्षिरके सारा अपने नेनापतियांका अभिष्ठक युद्धिक्षिरके सारा अपने नेक्ट रुक्क प्रता प्रथान रूप्पर विषय केति स्वया देनेके लिये आजा; परंचु पाण्डव और कौरव दोनों पर्धोंके द्वारा कौरा उत्तर पाकर लीट जाना रूप्पर विभाव केति स्वया कैति अपने संवाद राप्य विक्वर संवाद स्वया विभाव केति स्वया कैति अपने संवाद राप्य विभाव केति स्वया कैति अपने संवाद राप्य विभाव केति स्वया केति अपने संवाद संवाद तथा विभाव केति स्वया केति अपने संवाद राप्य विभाव केति स्वया केति अपने संवाद राप्य विभाव केति स्वया केति अपने संवाद राप्य विभाव केति स्वया केति अपने संवाद तथा विभाव केति संवाद राप्य विभाव केति संवाद तथा विभाव केति सं		
१६२-ब्रॉथमका सेनाको सुश्रित होने और शिविर निर्माण करनेके लिये आज्ञा देना तमा सैनिकोंकी रणयात्राको लिये तैयारी २४४५ सिम् पुषिष्ठिरका भगवान् श्रीकृणणे अपने सम्बोवित कर्तन्वके विययमें पूछनाः भगवान् श्रीकृणणे अपने सम्बोवित कर्तन्वके विययमें पूछनाः भगवान् श्रीकृणाने अपने सम्बोवित कर्तन्वके विययमें पूछनाः भगवान् श्रीकृणाने अपने सम्बोवित कर्तन्वके विययमें पूछनाः भगवान् श्रीकृणाने करनेन्व ह्या साम प्राप्त पूछनाः भगवान् सुर्वक्षेत्र स्वाप और अनुनद्वारा श्रीकृणणे वचनोंका समर्थन "२४८९ विषयमें सुधिष्ठिरका भगवान् और अनुनद्वारा श्रीकृणाने वचनोंका समर्थन "२४४७ स्वकृणाने वचनोंका प्राप्त भनावित्योंका अभिकृष्ठ और कुरुवेवमें पहुँचकर स्वकृणाने स्वया स्वया सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया नेकार त्वरा सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया समान् स्वया स्वया स्वया स्वया सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया समान् स्वया सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र के विया समान् सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया समान् समान् सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया समान् सम्बानित्योंका सम्बानित्योंका अभिकृष्ठ वार्षेत्र विया समान् सम्बानित्योंका	The state of the s	अतिरथियोका वर्णन २४८३
स्थित निर्माण करनेके लिये आजा देना तथा सिनिकोंकी रणयात्राके लिये आजा देना सम्योचित कर्तव्यक्षेत विषयमें पूछना, भगवान्का युद्धको ही कर्तव्यक्ष तिया पूछना, भगवान्का युद्धको ही कर्तव्यक्ष तिया पूछना, भगवान्का युद्धको ही कर्तव्यक्ष तिया या स्था सिनिकोंकी रणयात्राक लिये निर्माण अपने समयोचित कर्तव्यक्ष विषयमें पूछना, भगवान्का युद्धको ही कर्तव्यक्ष तिया या स्था स्था युप्धिक्षका भगवान्का युद्धको ही कर्तव्यक्ष तिया या स्था सिमाजांका समर्थन रथ्य अपने विषय से युप्धकन्य अपने विमाजता और अनुनहारा अभिके विषय से सामजीका प्रधान-सेनापतिके पदरप अभिपेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विवय स्थान अभिषेक विद्या सामजीका प्रधान-सेनापतिके पदरप अभिपेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विवय स्थान स्था पण्डवींवि विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रधान रथ्य स्थान विपायतायों से सामजीका सहायता देनके लिये आना; परंतु पण्डव और अन्वाक्ष सालव्यक्ष के यहा जाना और उससे पर्धिक स्थान स्थान पण्डवींके वात्र रोग व्यक्षि के सामजीका सहायता देनके लिये आना; परंतु पण्डव और अन्वाक्ष सालव्यक्ष यहाँ जाना और उससे परियक्त होत्र सामजीका सहायता देनके लिये अना; परंतु पण्डव और अन्वाक्ष सालव्यक्ष के यहाँ जाना और उससे परियक्त होत्र सामजीका प्रधान रथ्य स्थान स्थान पण्डवेंके पासभेका उद्धक्को हुत बनाकर पण्डवोंके पासभेका अवस्था स्थान स्थान पर्धिक के सामजीका अवस्था स्थान स्थान सामजीका अवस्था स्थान	शिविर-सिर्माण २०००	१६८-कौरवपश्चके रथियों और अतिरथियोंका
सेवाद तथा दुर्बोधनका उसका निवारण र १४८५ तथा सैनिकोंको रणयात्राके लिये तथारी २४४५ तथा सैनिकोंको रणयात्राके लिये तथारी २४४५ समवोचित कर्तव्यके लिये तथारी पूछना, भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय और अर्जुनद्वारा भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय और अर्जुनद्वारा भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय और अर्जुनद्वारा भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय भगवान्का युद्धको हो कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिग्रिका संताय भगवान्का और अर्जुनद्वारा भगवान्का युद्धको हो स्वर्धका संताय २४४० १५६-युधिग्रिका द्वारा भोम्मजीका प्रधान-सेनापतिको व्यय करनेका कथन २४४० १५६-युधिग्रिका द्वारा भोम्मजीका प्रधान-सेनापतिको व्यय करनेका कथन २४५० १५६-युधिग्रिका द्वारा भोम्मजीका प्रधान-सेनापतिको व्यय करनेका कथन २४५० १५६-युधिग्रिका द्वारा अर्जे सेनापतियोंका अभियेक युद्धविग्रिका व्यय पण्डवोंका अभियेक युद्धविग्रिका व्यय पण्डवोंका अभियेक युद्धविग्रिका व्यय पण्डवोंका अभियेक युद्धविग्रिका व्यव प्रधान २४५० १५६-युग्वग्रु अर्जे द्वारा युधिग्रिका संवाद २४५० १५६-युग्वग्रु अर्जे संवयका संवाद २४५० १५६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे व्यवस्थि संदेश देना १४५० १५६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे अर्जे संवय देना १४५० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे अर्जे संवयका संवाद २४५० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे व्यवस्थि संवय देना १४५० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे अर्जे संवय देना १४५० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे अर्जे पर्चाको संवाद १४६८ १६६-वाग्वोके राव्याको संवय २५६० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे व्यवस्थ संवय देना १४५० १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे व्यवस्थ संवय देना १४६८ १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे पर्चाको संवय १४६८ १६६-वाग्वोके प्रथामजीको अर्जे व्यवस्थ संवय विग्वेके व्यवस्थ संवय विग्वेके व्यवस्थ संवय विग्वेके व		
तथा सैनिकोंकी रणयात्राके लिये तैयारी २४४५ १९४-पुधिष्ठिरका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने समबोचित कर्तव्यके विषयमें पूछनाः भगवान्का युद्धको ही कर्तव्य कताना तथा इस विषयमें युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन १९४५-पुर्थोधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और प्रथक्पुर्थक् अक्षौहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक पदपर अभिषेक और कुरुश्चेत्रमें पहुँचकर शिवर-निर्माण १५५-पुधिष्ठरके द्वारा भीमजीका प्रधान सेनापतियोंका अभिषेक । युक्तविर्योंका अभिषेक और कुरुश्चेत्रमें पहुँचकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान अभिषेक । युक्तविर्योंका अभिषेक । युक्तविर्यांका लिये प्रस्थान अभिष्ठ । युक्तविर्योंका । युक्तविर्योंका अभिष्ठ । युक्तविर्योंका अभिष्ठ । युक्तविर्योंका अभिष्ठ । युक्तविर्योंका व्यव्यक्तविर्योंका व्यव्यक्तविर्योंका व्यव्यक्तविर्योंका व्यव्यक्तविर्योंका वर्णन तथा विराट और द्वार्यों और महार्योंका । २४९९ १९४९-भूमोका वर्णन स्थानि । योशिका वर्णन करते हुए शिखवण्डी और पाण्डवोंका वर्णन करते हुए शिखवण्डी वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णन करते हुए शिखवण्डी अधिका वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णन करते हुए शिखवण्डी अधिका वर्णन स्थाप पाण्डवेंक व्यव्यक्तविर्यों वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णविर्यों वर्णन स्थाप पाण्डवेंक वर्णन स्थाप पाण्ववेंक वर्णन स्थाप पाण्ववेंक वर्णन स्थाप पाण्यवेंक वर्णविर्यों कर्णविर्यों वर्णन स्		그 가게 아이들이 그 생각이 되었다면서 가는 그 그가 되었다면서 하는 그 사람이 어떻게 되었다.
सम्बोचित कर्तब्बके विषयमें पूछनाः भगवान्का युद्धको ही कर्तब्ब वताना तथा इस विषयमें युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन १५६-दुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और प्रथक-पुथक् अक्षीहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक पदमर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विविद्धतिर्माण १५६-दुर्योधनके द्वारा भीमाजीका प्रधान-सेनापतिके पदमर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विविद्धतिर्माण १५६-दुर्योधनके द्वारा अपने सेनापतिके अभिषेक यद्वविद्यायाहित यल्यमजीका आवामन तथा पण्डवीसे विद्या लकर उनका तीर्थयात्रके लिये प्रस्थान १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवामन तथा पण्डवीसे विद्या लकर उनका तीर्थयात्रके लिये प्रस्थान १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५५ १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५५ १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अभ्वाका वाल्वराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीमासे आवा मानना १५५५ १५५-अम्बाका शाल्वराजके प्रति अभ्वाका वाल्वराजके प्रति अनुराग अरेर १५५५ १०५-अम्बाका शाल्वराजके प्रवास संवाद १५५५ १०५-अम्बाका वर्णन १०५-अम्बाका वर्णन १०५-अम्बाका वाल्वराजके राधियांका विद्य करान्वरावेके विद्य संग्येके स्वर्ध संवार संवर्ध संवर्ध संवर संवर्ध संवर संवर्ध संवर संवर संवर संवर संवर प्रवर्ध संवर संवर संवर संवर संवर संवर संवर संवर		
समयोचित कर्तव्यके विषयमें पूछनाः भगवान्का युद्धको ही कर्तव्य वताना तथा इस विषयमें युधिग्रिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन २४४७ १५५-दुर्योधनके द्वारा सेमार्जाका विभाजन और प्रथक्ष-प्रथक् अश्रीहिणियोंके सेनापितयोंका अभिषेक अभिषे		
भगवान्का बुद्धको ही कर्तव्य बताना तथा इस विषयमें बुधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा अिक्षणके वचनोंका समर्थन १५५-दुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और पृथक्-पृथक् अक्षीहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक १५६-दुर्योधनके द्वारा मीध्मजीका प्रधान-सेनापतिके पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विविद्गतिर्माण १५५-अधिष्ठिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक १८५५ अप्रधान १८५५ १५५-दुर्योधनके द्वारा आध्मजीका प्रधान-सेनापतिके पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विविद्गतिर्माण १५५-अधिष्ठिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक यदुर्वदिव्योगिहित वल्रामजीका आगमन तथा पण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रसान १५५-अपनेपाका शाल्वरोंक पत आना; परंतु पण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लीट जाना १५५५ १५५-पुर्वाध्र और संत्रवक्ष संवाद (उत्दूकदूतागमनपर्व) १६०-दुर्योधनका उद्धकका स्वाद १५५-पुण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उत्कका मर्ग सभीमें दुर्योधनका संदेश सुनाना १५५८ १६२-पण्डवर्थक्की ओरसे दुर्योधनको उसके संदेशका उत्तर १६१२-पण्डवर्थक्की ओरसे दुर्योधनको उसके संदेशका उत्तर १५५०		
शिष्ठिस्का संताप और अर्जुनद्वारा अफ्रिणके वचनोंका समर्थन र४४० १५५-दुर्योधनके द्वारा सेनाऑका विभाजन और पृथक-पृथक अक्षीहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक स्वारा सेनाऑका प्रधान-सेनापतिके प्रयाप अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर विविद्यनिर्माण स्वर्थे विद्वा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रसान र४५१ १५८-ब्रमीका सहायता देनेके लिये असा; परंतु पाण्डव और कौरव दोनों पश्चोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लीट जाना १४५९-ब्रमीका सहायता देनेके लिये संदा र र४५१ १५६-बुर्योधनका उद्धकका मृत्र (अस्वेपाल्यानका आरम्भ भीमा जोते उससे परित्य होकर ताना सेनापतियोंका अभिषेक, यदुर्वाद्वायोंसहित वलरामाजेका आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रसान १४५४ १५८-ब्रमीका सहायता देनेके लिये आना; परंतु पाण्डव और कौरव दोनों पश्चोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लीट जाना १४५९-बुर्तायमनपर्य (अस्व-तापतींके आश्चममें राजिर्थ होक्रवाह और अस्वाका संवाद १४५९ १५६-तापतींके आश्चममें राजिर्थ होक्रवाह और अस्वाका प्रमान तथा उनसे अम्याकी वातचीत १५९-अन्वतात्रण और परद्युरामाजीका अम्बाक संवाद १५९०-अन्वतात्रण और परद्युरामाजीका अम्बाक संवाद १५९०-अन्वतात्रण और परद्युरामाजीका अम्बाक संवाद १५९०-अन्वतात्रण और परद्युरामाजीका संवाद १५९०-अन्वतात्रण और परद्युरामाजीका संवाद १५९०-अन्वताण और परद्युरामाजीका संवाद १५९०-अन्वताण तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर सन्वता उत्तर सन्वता उत्तर विद्युक्ष संवाद अक्ष्रविश्वका संवाद १५०-अन्वताण तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर सन्वता सन्वता उत्तर सन्वता सन्व		12 1000 1000 W 1000
श्रीकृषणके वचनोंका समर्थन १५५-वुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और प्रथक-पृथक अक्षीहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक १५६-वुर्योधनके द्वारा भीध्माजीका प्रधान सेनापतिके पदरर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर हिविर-निर्माण १५६-वुर्योधनके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक वहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याधनका आरम्भ—भीध्मजीके द्वारा हिविर-निर्माण १५५-वुर्षोष्ठरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक यहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक यहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक यहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक वहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक यहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक वहुर्वहिर्योगिहित वहुर्याप्रजीका अभिषेक वहुर्याप्रजीक विद्या सेन्स्य स्वर्याप्रजीक वहुर्याप्रजीक सेन्स्य से		
१५५- दुर्बोधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और पृथक्-पृथक् अक्षौहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक १५६- दुर्बोधनके द्वारा भीध्मजीका प्रधान-सेनापतिके पदरप अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर शिविर-निर्माण १५५०- दुर्बोधनके द्वारा भीध्मजीका प्रधान-सेनापतिके पदरप अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर शिविर-निर्माण १५५०- दुर्बोधिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक यदुर्बिश्चेयोंसहित यट्टरामजीका आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा टेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान १५५८- इक्मीका सहायता देनेके लिये आना; परंतु पाण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लीट जाना १६५०- दुर्बोधनका उत्दक्को दूत बनाकर पाण्डवोंके पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना सभामें दुर्बोधनका उत्दक्को परंतु वारामान अरुद्विश्चेयांस्ति अर्थाका संवाद १६१- पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उत्दक्का भरा सभामें दुर्बोधनका संदेश सुनाना १६१- पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्बोधनको उत्तके संदेशका उत्तर १५०२ १५०२ १५०२- प्रवाणका प्राप्त सेना सेना प्रप्त सेना सेना स्वाप्त सेना सेना सेना सेना सेना सेना सेना सेना		
प्रथक-पृथक् अक्षौहिणियों से सेनापतियोंका अभिषेक		
अभिषेक		(B. H. N. N. H. C. 프랑스(전환)
१५६ - दुर्योधनके द्वारा मीम्मजीका प्रधान सेनापतिके पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर शिविर-निर्माण	उपकृष्ट्यक् अञ्चाहाणयाक सनापातयाका	
पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर हिष्यि-निर्माण	र्पुरूष् १५६-दर्योधनके द्वारा भीध्यजीका प्रधान-मेनापनिके	
शिविर-निर्माण		[10] [10] [10] [10] [10] [10] [10] [10]
१५७-बुधिष्ठरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेकः यदुवंशियोंसहित यल्प्यमंजीका आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान १९५५ श्रुप्य श्रुप्य कोर कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा पाण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लीट जाना १९५६ श्रुप्य श्रुप्य संजयका संवाद १९५६ श्रुप्य संवचका अपनाका अपनाका संवाद १९५६ श्रुप्य संवचका अपनाका अपनाका संवाद १९५६ श्रुप्य संवचका अपनाका अपनाका अपनाका अपनाका संवाद १९५६ श्रुप्य संवचका अपनाका अपनाका अपनाका अपनाका अपनाका संवाद १९५० अकृतत्रणका आगमन तथा उनसे अन्वाका संवाद १९५० अकृतत्रण और परद्युरामजीकी अन्वासे वातचीत १९५० अकृतत्रणकी सलाह, परद्युरामजीका संवाद, संवचका उत्तर १९५० श्रुप्य वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके लेथे कुरुक्षेत्रमें उत्तरना १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संवेशका उत्तर १९५० श्रुप्य करने वातचित्त वातचित्र वातचित्र वातच्य वातचित्य वातचित्र वातच्य वातच्य वातच्य वातच्य वातच्य वातच्य वातच्य वातच्	शिवर-निर्माण *** २४५१	
अभिषेकः यदुवंशियोंसहित यलरामजीका आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान		
अगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान रहेष्ठ अन्त ताप्त तीर्थ केरे केरे केरे केरे अन्त होकर ताप्त तीर्थ अग्रममें आना यहाँ दौत्वावत्य और अभ्याका संवाद रहेष्ठ विद्या केरे केरे केरे केरे केरे केरे केरे केर		
उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान	आग्रम तथा पणहरोंने विदा नेका	
पण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा वहाँ दौलावत्य और अस्वाका संवाद राष्ट्र कोरा उत्तर पाकर लौट जाना रुप्द र	उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान २४५४	आज्ञा मानना " २४९५
पाण्डव आर कारव दाना पक्षक द्वारा वहाँ दौलावत्य और अम्बाका संबाद ः २४९५ कोरा उत्तर पाकर लौट जाना ः २४५६ १७६-तापसोंके आश्रममें राजिष होत्रवाहन और १५९-धृतराष्ट्र और संजयका संबाद ः २४५९ अकृतत्रणका आगमन तथा उनसे अम्बाकी वातचीत ः २४९८ १७७-अकृतत्रण और परद्युरामजीकी अम्बासे पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६० वातचीत ः २५०२ १७८-अम्बा और परद्युरामजीका संबाद ः २५०२ १७८-अम्बा और परद्युरामजीका संबाद ः २५०२ १६१-पाण्डवंभिके शिविरमें पहुँचकर उत्कका भरी सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना ः २४६८ अकृतत्रणकी सलाह, परद्युरामजीका संबाद विद्युष्ट वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर ः २५०४	१५८-इक्मीका सहायता देनेके लिये आना; परंतु	
१५६-शृतराष्ट्र और संजयका संवाद	पाण्डव और कौरव दोनों पश्चोंके द्वारा	
१५९-धृतराष्ट्र और संजयका संवाद	कोरा उत्तर पाकर लौट जाना 💛 २४५६	
(उत्दूकदूतागमनपर्व) वातचीत २४९८ १६०-दुर्योधनका उत्दूकको दूत बनाकर पाण्डवोंके १७७-अकृतक्रण और परशुरामजीकी अम्बासे पासभेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६० वातचीत २५६० स्१९-पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उत्दूकका भरी १७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद, सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना २५६८ अकृतक्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी रेपिपण वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर २५०४	१५९ भृतराष्ट्र और संजयका संवाद २४५९	
१६०-दुर्योधनका उल्क्रको दूत बनाकर पाण्डबोंके १७७-अकृतक्रण और परशुरामजीकी अम्बासे पासभेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६० वातचीत २५०२ १६१-पाण्डबोंके शिविरमें पहुँचकर उल्क्रका भरी १७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद, सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना २४६८ अकृतक्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी रेपिप्ण वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर २४७१ लिये कुरुक्षेत्रमें उत्तरना २५०४	(उत्रुकद्तागमनपर्व)	
पास भेजना और उनसे बहनेके लिये संदेश देना २४६० वातचीत २५०२ १६१-पाण्डवींके शिविरमें पहुँचकर उल्कका भरी १७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद, सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना २४६८ अकृतव्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी १६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके रोपपूर्ण वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर २४७१ लिये कुरुक्षेत्रमें उत्तरना २५०४	१६०-दुर्योधनका उद्गकको दृत बनाकर पाण्डवोंके	र १७७ – अकतवण और परशरामबीकी अस्त्रमे
१६१-पाण्डवींके शिविरमें पहुँचकर उल्का भरी १७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद, सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना " २४६८ अकृतव्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी १६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके रोपपूर्ण बातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर " २४७१ लिये कुरुक्षेत्रमें उत्तरना " २५०४	पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६०	
सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना २४६८ अकृतव्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी १६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके रोपपूर्ण वातचीत तथा उन दोनीका युद्धके संदेशका उत्तर २४७१ ल्विये कुरुक्षेत्रमें उत्तरना २५०४	१६१-पाण्डवींके शिविरमें पहुँचकर उल्कका भरी	
१६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके रोपपूर्ण वातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके संदेशका उत्तर · · · २४७१ लिये कुरुक्षेत्रमें उतरना · · · २५०४	सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना ••• २४६८	(
संदेशका उत्तर · · · · २४७१ लिये कुरुक्षेत्रमें उत्तरना · · · २५०४	१६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके	
	संदेशका उत्तर · · · २४७१	
	१६३-पाँचों पाण्डवों। विराटः द्रुपदः शिखण्डी	१७९-संकल्पनिर्मित रथपर आरूढ़ परशुरामजीके
और धृष्टद्युम्नका संदेश टेकर उल्कका लीटना साथ भीध्मका युद्ध प्रारम्भ करना २५१०	और भृष्टद्युम्नका संदेश लेकर उल्कका लौटना	
और उद्ककी बात सुनकर दुर्वोधनका १८०-भीष्म और परशुरामका घोर युद्ध २५१२	और उल्किकी बात मुनकर दुर्योधनका	१८०-भीष्म और परश्चरामका घोर यद
छेना को युद्धके लिये तैयार होनेका १८१-भीष्म और परशुरामका युद्ध ··· २५१५	सेनाको युद्ध के लिये तैयार होनेका	१८१-भीष्म और परश्ररामका यद्ध
आदेश देना · · · २४७५ १८२-भीष्म और परद्युरामका युद्ध · · २५१६	आदेश देना · · · २४७५	

१८३-भीध्मको अष्टवसुओंसे प्रस्वापनास्त्रकी प्राप्ति २५१८	१९०-हिरण्यवर्माके आक्रमणके भयसे घवराये हुए
१८४-भीष्म तथा परशुरामजीका एक दूसरेपर	दुपदका अपनी महारानीसे संकटनिवारणका
शक्ति और ब्रह्मास्त्रका प्रयोग २५१९	
१८५-देवताओंके मना करनेसे भीष्मका प्रस्वापना-	१९१-द्रुपदपत्नीका उत्तरः द्रुपदके द्वारा नगररक्षाकी
स्रको प्रयोगमें न लाना तथा पितरः देवता	व्यवस्था और देवाराधन तथा शिखण्डिनीका
और गङ्गाके आग्रहसे भीष्म और	वनमें जाकर स्थूणाकर्ण नामक यश्चसे अपने
परशुरामके युद्धकी समाप्ति २५२०	दुःखनिवारणके लिये प्रार्थना करना • • • २५३०
१८६-अम्बाकी कठोर तपस्या " २५२३	
१८७-अम्बाका द्वितीय जन्ममें पुनः तप करना	हिरण्यवर्माकी प्रसन्नताः स्थूणाकर्णको कुवेरका
और महादेवजीसे अभीष्ट बरकी प्राप्ति	शाप तथा भीष्मका शिखण्डीको न
तथा उसका चिताकी आगर्मे प्रवेश · · · २५२५	 मारनेका निश्चय *** २५३६
१८८-अम्याका राजा द्रुपदके यहाँ कन्याके रूपमें	१९३-दुर्योधनके पूछनेपर भीष्म आदिके द्वारा
जन्मः राजा तथा रानीका उसे पुत्ररूपमें	अपनी-अपनी शक्तिका वर्णन ••• २५३७
प्रसिद्ध करके उसका नाम शिलण्डी रखना *** २५२६	
१८९-शिखण्डीका विवाह तथा उसके स्त्री होनेका	तथा सुधिष्ठिरकी भी शक्तिका परिचय देना २५३८
समाचार पाकर उसके श्वगुर दशार्णराजका	१९५-कौरवसेनाका रणके लिये प्रस्थान *** २५३९
महान् कोप · · · २५२८	१९६-पाण्डवसेनाका युद्धके लिये प्रस्थान "" २५४१
	•सूची १३-धतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका
(रंगीन)	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका
(रंगीन) १–विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण ··· २०३९	१२-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बलानते हुए
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१२-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१२-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण ः २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे मेंट ः २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध ः २१९३	१२-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका वल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रको द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२१९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड्का
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड्का गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३७०
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रको द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२१९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड्का गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३८६
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण ' २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे मेंट ' २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध ' २१९३ ४-हस्तिनापुरके मार्गमें श्रृषियोंका आकर श्रीकृष्णसे मिलना ' २२८७ ५-कौरवसभामें विराट् रूप ' २३९३ (सादा) ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका वल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुइका गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३७० २०-दुर्योधनको गान्धारीकी फटकार २३८६ २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण '' २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे मेंट '' २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध '' २१९३ ४-हस्तिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका आकर श्रीकृष्णसे मिलना '' ' २२८७ ५-कौरवसभामें विराट् रूप '' २३९३ (सादा) ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके लिये सहायता माँगना '' २०५०	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रको द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२१६ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुइका गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३६५ २९-युर्गोधनको गान्धारीकी फटकार २३८६ २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५ २२-पाण्डवोंके डेरेमें बलरामजी २४५६
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण '' २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे मेंट '' २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध '' २१९३ ४-हस्तिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका आकर श्रीकृष्णसे मिलना '' २२८७ ५-कौरवसभामें विराट् रूप '' २३९३ (सादा) ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके लिये सहायता माँगना '' २०५० ७-नहुषका स्वर्गसे पतन ''' २०८०	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका वल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुइका गर्यनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३६६ २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५ २२-पाण्डवोंके डेरेमें बलरामजी २४५५ २३-पाण्डवोंकी विशाल सेना २४७८
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बलानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड्रका गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३७० २०-दुर्योधनको गान्धारीको फटकार २३८६ २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५ २२-पाण्डवोंके ढेरेमें बलरामजी २४५५ २३-पाण्डवोंकी विशाल सेना २४७८
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण ' २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे भेंट ' २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध ' ११९३ ४-हस्तिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका आकर श्रीकृष्णसे मिलना ' २२८७ ५-कौरवसभामें विराट् रूप ' २३९३ (सादा) ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके लिये सहायता माँगना ' २०५० ७-नहुषका स्वर्गसे पतन ' २०८० ८-आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव ' २१०९ ९-विदुर और धृतराष्ट्र ' २१६६	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रको द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२१६ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१७ १७-गोमाता सुरभि २३३५ १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुङ्का गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३६५ २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५ २२-पाण्डवोंको विशाल सेना २४५५ २४-भोष्म-दुर्योधन-संवाद २४८० २५-पाण्डव-सेनापति भृष्टयुम्न २४९०
(रंगीन) १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका भाषण '' २०३९ २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे मेंट '' २०९८ ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी बात याद रखनेका अनुरोध '' २१९३ ४-हस्तिनापुरके मार्गमें ऋषियोंका आकर श्रीकृष्णसे मिलना '' २२८७ ५-कौरवसभामें विराट् रूप '' २३९३ (सादा) ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके लिये सहायता माँगना '' २०५० ७-नहुषका स्वर्गसे पतन '' २०८० ८-आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव '' २१०६	१३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवींका संदेश सुना रहे हैं २२१६ १४-भीमसेनका वल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २२१६ १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २२९९ १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश २३१५ १७-गोमाता सुरभि १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड्का गर्वनाश २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३३५ १९-ययातिका स्वर्गारोहण २३३५ २९-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं २४१५ २२-पाण्डवोंके ढेरेमें बलरामजी २४५५ २३-भीष्म-दुर्योधन-संवाद २४८० २५-भीष्म-दुर्योधन-संवाद २४९० २६-भीष्म और परशुरामके युद्धमें नारदर्जी-

57/187

भीष्मपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष ्ठ-संस्थ ा
	(जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व)			थियोंका युद्धके लिये आगे	
१-कुरुक्षेत्रमें	े उभय पक्षके सैनिकोंकी स्थिति ।यमोंका निर्माण	तथा	वर्णन	व्यूइः वाइन और ध्वज	4464
२-वेदच्यास	जीके द्वारा संजयको दिन्य ह । भयसूचक उत्पातीका वर्णन	ष्टिका		ज कोलाइल तथा र्णन ••• को विषयमें युधिष्ठिर और	
३व्यासजीवे विजयसूच	हे द्वारा अमङ्गलसूचक उत्पातों वक लक्षणोंका वर्णन	तथा ••• २५४७	बातचीतः	अर्जुनद्वारा वज्रव्यूहकी अध्यक्षतामें सेनाका आ	रचनाः
४-धृतराष्ट्रके महत्त्वका	पूछनेपर संजयके द्वारा भ वर्णन · · ·	∬मेक ∵∵ २५५३	२०-दोनों सेन अधियान	गाओंकी स्थिति तथा कौर 	वसेनाका ··· २५८९
५-पञ्चमहाभ् वर्णन	स्तों तथा सुदर्शनद्वीपका स 	धिप्त ··· २५५५	२१-कौरवसेनाव करना औ	हो देखकर युधिष्ठिरका र श्रीकृष्णकी कृपासे इं	विघाद विजय
	वर्षः पर्वतः मेरुगिरिः गङ्ग प्राकृतिका वर्णन · · ·			यह कहकर अर्जुन देना ःः	
वर्णन '	हुरुः भद्राश्ववर्ष तथा मास्यव ••	२५५९	२२युधिष्ठिरकी	रणयात्राः अर्जुन क्षौर भं ग श्रीकृष्णका अर्जुनसे कौर	ामसेनकी
ऐरावतव	हिरण्यकः शृङ्गवान् पर्वत र्षका वर्णन	२५६१	मारनेके लि	ध्ये कहना द्वारा दुर्गादेवीकी स्तुतिः	२५९२
नाम औ	की नदियों। देशों तथा जन र भूमिका महस्त्व	२५६३		नकृत दुर्गास्तवनके पाठक हर्ष और उत्साहके विषयमें	
	र्धेमें युगोंके अनुसार मनुष्योंकी गोंका निरूपण · · ·		और संजय	का संवाद	२५९६
	(भूमिपर्व)			ह्रगवद्गीतायां प्रथमोऽध	VIVE TOTAL
	मका वर्णन होज्ज और पुष्कर आदि द्वीपोंका		शङ्कृष्वनिव	गाओंके प्रधान-प्रधान वी हा वर्णन तथा स्वजनवधः हुए अर्जुनका विषाद	के पापसे
राष्ट्र,	सूर्य एवं चन्द्रमाके प्रमाणका	वर्णन २५७०		इ.गचद्गीतायां द्वितीयोऽ	
भीष्मक	(श्री मद्भगवद्गीतापर्व) । युद्धभृमिसे लौटकर धृतः ग्रीमृत्युका समाचार सुनाना का विलाप करते हुए भीष	२५७३	अर्जुनको भगवान्के पूर्वक सांग	युद्धके लिये उत्साहित व द्वारा नित्यानित्य वस्तुके (व्ययोगः) कर्मयोग एवं सि	हरते हुए विवेचन- थतप्रज्ञकी
मारे उ	तानेकी घटनाको विस्तारपूर्वक ज जयसे प्रश्न करना	ाननेके	- / 0-	र महिमाका प्रतिपादन इगवद्गीतायां तृतीयोऽ१	
१५-संजयक करना-	ा युद्धके वृत्तान्तका वर्णन ३ —दुर्योधनका दुःशासनको भं	गरम्भ ोष्मकी	शानयोग । अनुसार	और कर्मयोग आदि समस्त कर्तव्य कर्म करनेकी आव	साधनोंके श्यकताका
	लिये समुचित व्यवस्था करनेकाः किं। सेनाका वर्णन			्र एवं स्वधर्मपालनकी महि सके उपायका बर्णन	

२८-(श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्थोऽध्यायः)	३६-(श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वादशोऽध्यायः)
सगुण भगवान्के प्रभावः निष्काम कर्मयोग तथा योगी महात्मा पुरुषोंके आचरण और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए विविध यज्ञों एवं ज्ञानकी महिमाका वर्णन " २६२३	साकार और निराकारके उपासकोंकी उत्तमता- का निर्णय तथा भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं भगवत्प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन २७२७
२९-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्जमोऽध्यायः) सांख्ययोगः निष्काम कर्मयोगः ज्ञानयोग एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन ः २६३६	३७-(श्रीमद्भगवद्गीतायां त्रयोदशोऽध्यायः) ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और प्रकृति-पुरुषका वर्णन " २७३९ ३८-(श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्दशोऽध्यायः)
२०-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पष्ठोऽध्यायः) निष्काम कर्मयोगका प्रतिपादन करते हुए आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा तथा मनोनिग्रहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन २६४५	ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषसे जगत्की उत्पत्तिकाः सन्तः रजः तम—तीनी गुणीकाः भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणतीत पुरुषके लक्ष्मणीका वर्णन २७५२
३१-(श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तमोऽध्यायः) ज्ञान-विज्ञानः भगवान्की व्यापकताः अन्य देवताओंकी उपासना एवं भगवान्को प्रभाव- सहित न जाननेवालेंकी निन्दा और जानने- वालोंकी महिमाका कथन " २६५८	३९-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चदशोऽध्यायः) संसारवृक्षकाः भगवत्प्राप्तिके उपायकाः जीवात्माकाः प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूपका एवं क्षरः अक्षर और पुरुषोत्तमके तत्त्वका वर्णन २७६२
३२-(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टमोऽध्यायः) ब्रह्मः अध्यात्म और कर्मादिके विषयमें अर्जुनके सात प्रश्न और उनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा ग्रुक्ल और कृष्ण मार्गोका प्रतिपादन · · · २६६५	४०-(श्रीमद्भगवद्गीतायां पोडशोऽध्यायः) फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदाका वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणोंको त्यागने और शास्त्रके अनुकृल आचरण करनेके लिये प्रेरणा २७६९
३३-(श्रीमद्भगवद्गीतायां नवमोऽध्यायः) ज्ञानः विज्ञान और जगत्की उत्पत्तिकाः आसुरी और दैवी सम्पदावालीकाः प्रभावसिंहत भगवान्- के स्वरूपकाः सङ्गाम-निष्काम उपासनाका एवं भगवद्-भक्तिकी महिमाका वर्णन	४१-(श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तद्शोऽध्यायः) श्रद्धाका और शास्त्रविपरीत धोर तप करनेवालोंका वर्णनः आहारः यज्ञः तप और दानके प्रथक्-प्रथक् भेद तथा ॐ, तत्र सत्के प्रयोगकी व्याख्या २७७५
३४-(श्रीमञ्जगवद्गीतायां दशमोऽध्यायः) भगवान्की विभृति और योगशक्तिका तथा प्रभावसहित भक्तियोगका कथनः अर्जुनके पूछनेपर भगवान्द्वारा अपनी विभृतियोंका और योगशक्तिका पुनः वर्णन " २६९१	४२-(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टादशोऽध्यायः) त्यागकाः सांख्यसिद्धान्तकाः फलसहित वर्ण- धर्मकाः उपासनासहित ज्ञाननिश्राकाः भक्तिसहित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्म्यका
३५-(श्रीमद्भगवद्गीतायामेकाद्शोऽध्यायः) विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थनाः भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णनः अर्जुनद्वारा भगवान्के विश्वरूपका देखा जानाः भयभीत हुए अर्जुनद्वारा भगवान्की स्तुति-प्रार्थनाः भगवान्द्वारा विश्वरूप और चतर्भजरूपके दर्शनकी महिमा और केवल	वर्णन २७८४ (भीष्मवधपर्व) ४३-गीताका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरका भीष्मः द्रोणः, कृप और शल्यसे अनुमाते लेकर युद्धके लिये तैयार होना २८१३ ४४-कौरव-पाण्डवोंके प्रथम दिनके युद्धका आरम्भ २८२१

अनन्यभक्तिचे ही भगवान्की प्राप्तिका कथन २७०८ ४५-उभयपक्षके सैनिकोंका दन्द्र-युद्ध ... २८२३

४६-कौरव-पाण्डवसेनाका घमासान युद्ध · · · २८२८ ४७-भीष्मके साथ अभिमन्युका भयंकर युद्धः	६५-धृतराष्ट्र-संजय-संवादके प्रसङ्गमें दुर्योधनके द्वारा पाण्डवोंकी विजयका कारण पूछनेपर भीष्मका
शब्यके द्वारा उत्तरकुमारका वध और स्वेतका पराक्रम २८३१	ब्रह्माजीके द्वारा की हुई भगवत्-स्तुतिका कथन २९०५ ६६—नारायणावतार श्रीकृष्ण एवं नरावतार
४८-वितका महाभयंकर पराक्रम और भीष्मके	अर्जुनकी महिमाका प्रतिपादन " २९१०
द्वारा उसका वथ · · · २८३६	६७-भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा २९१३
४९-शङ्खका युद्धः भीष्मका प्रचण्ड पराक्रम तथा	६८-ब्रह्मभ्तसोत्र तथा श्रीकृष्ण और अर्जुन-
प्रथम दिनके युद्धकी समाप्ति " २८४३	की महत्ता २९१५
५०-युधिष्ठिरकी चिन्ताः भगवान् श्रीकृष्णद्वारा	६९-कौरवोंद्वारा मकरच्यूह तथा पाण्डवोंद्वारा
आश्वासनः धृष्टयुम्नका उत्साह तथा द्वितीय	स्येनव्यूहका निर्माण एवं पाँचवें दिनके
दिनके युद्धके लिये क्रौद्धारण व्यूहका निर्माण २८४६	युद्धका आरम्भ २९१६
५१-कौरव-सेनाकी ब्यूइ-रचना तथा दोनों दलोंमें	७०-भीष्म और भीमसेनका धमासान युद्ध · · · २९१८
शङ्कष्विन और सिंहनाद " २८५०	७१-भीष्मः अर्जुन आदि योद्धाओंका घमासान युद्धः २९२०
५२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध २८५२	७२-दोनों सेनाओंका परस्पर घोर युद्ध २९२३
५३-भृष्टयुम्न तथा द्रोणाचार्यका युद्ध	७३–विराट-भीष्मः अश्वत्थामा-अर्जुनः दुर्योधन-
५४-भीमसेनका कलिंगों और निवादोंसे युद्धः	भीमसेन तथा अभिमन्यु और लक्ष्मणके
भीमसेनके द्वारा शकरेवः भानुमान् और	इन्द्रयुद्ध ··· ·· २९२५
केंद्रमान्का वध तथा उनके बहुत-से	७४-सात्यिक और भ्रिश्रवाका युद्धः भृरिश्रवाद्वारा
सैनिकॉका संहार २८५९	सात्यिकके दस पुत्रीका वधः अर्जुनका पराक्रम
	तथा पाँचवें दिनके युद्धका उपसंहार · · · २९२८
५५-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूसरे	७५-छठे दिनके युद्धका आरम्भः पाण्डव तथा
दिनके युद्धकी समाप्ति २८६७	कौरवसेनाका क्रमशः मकरव्यूह एवं क्रौञ्चव्यूह
५६-तीसरे दिनकौरव-पाण्डवींकी ब्यूह-रचना	वनाकर युद्धमें प्रवृत्त होना " २९३१
तथा युद्धका आरम्भ २८७०	७६-धृतराष्ट्रकी चिन्ता २९३३
५७-उभयपक्षकी सेनाओंका घमामान युद्ध " २८७१	७७-भीमसेनः धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका पराक्रम २९३५
५८-पाण्डव-बीरोंका पराक्रमः कौरव-सेनामें भगदङ्	७८-उभय पक्षकी सेनाओंका संकुलयुद्ध · · · २९४०
तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद " २८७४	७९-भीमसेनके द्वारा दुर्योधनकी पराजयः अभिमन्यु
५९-भीष्मका पराक्रमः श्रीकृष्णका भीष्मको	और द्रौपदीपुत्रोंका धृतराष्ट्रपुत्रोंके साथ
मारनेके लिये उद्यत होनाः अर्जुनकी प्रतिज्ञा	युद्ध तथा छडे दिनके युद्धकी समाप्ति · · · २९४३
और उनके द्वारा कौरवसेनाकी पराजयः	८०-भीष्मद्वारा दुर्योधनको आश्वासन तथा सातवें
तृतीय दिवसके युद्धकी समाप्ति २८७७	दिनके युद्धके लिये कौरवतेनाका प्रस्थान २९४७
६०-चौथे दिन-दोनों सेनाओंका व्यूहनिर्माण	८१-सातवें दिनके युद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंका
तथा भीष्म और अर्जुनका दैरथ-युद्ध २८८८	मण्डल और वज्रव्यृह वनाकर भीषण संघर्ष २९४९
६१-अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टयुम्नद्वारा	८२-श्रीकृष्ण और अर्जुनसे डरकर कौरव-सेनामें
शलके पुत्रका वध ःः २८९१	भगदङ्ग् होणाचार्य और विराटका युद्धः विराट-
६२-पृष्टयुम्न और शत्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका	
	पुत्र शङ्कका वधः शिलण्डी और अश्वत्थामाका
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३	युद्धः सात्यिकिके द्वारा अलम्बुषकी पराजयः
६३-युद्धस्त्रमे प्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका	भृष्युमने द्वारा दुर्योधनकी हार तथा भीमसेन
भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यिक और	और कृतवर्माका युद्ध २९५२
भूरिश्रवाकी मुठभेड़ २८९७	८३-इरावान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजयः
६४-भीमसेन और घटोत्कचका पराक्रमः कौरवीकी	भगदत्तसे घटोत्कचका हारना तथा मद्रराजपर
पराजय तथा चौथे दिनके युद्धकी समाप्ति''' २९००	नकुल और सहदेवकी विजय 💮 २९५६

	९७—दुर्योधनका अपने मन्त्रियोंसे सलाइ करके भीप्म-
	से पाण्डवोंको मारने अथवा कर्णको युद्धके लिये
	आज्ञा देनेका अनुरोध करना ३००७
	९८-भीष्मका दुर्योधनको अर्जुनका पराक्रम बताना
2980	और भयंकर युद्धके लिये प्रतिश करना तथा
	प्रातःकाल दुर्योधनके द्वारा भीष्मकी रक्षाकी
	व्यवस्था ३००९
256 8	९९-नर्वे दिनके युद्धके लिये उभयपक्षकी सेनाओं-
	की ब्यूहरचना और उनके धमासान युद्धका
	आरम्भ तया विनाशसूचक उत्पातींका वर्णन २०१३
	१००-द्रौपदीके पाँचों पुत्रों और अभिमन्युका राक्षस
	अलम्बुषके साथ घोर युद्ध एवं अभिमन्युके
	द्वारा नष्ट होती हुई कौरवसेनाका युद्धभूमिसे
	पत्त्रयन ३०१५
	१०१—अभिमन्युके द्वारा अलम्बुषकी पराजयः
	अर्जुनके साथ भीष्मका तथा कृपाचार्यः
	अश्वत्थामा और द्रोणाचार्यके साथ सात्यकिका
	युद्ध ३०१८
	१०२-द्रोणाचार्य और सुशर्माके साय अर्जुनका
	युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार ३०२२
	१०३—उभय पक्षकी सेनाओंका धमासान युद्ध और
	रक्तमयी रणनदीका वर्णन ३०२४
	१०४-अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तोकी पराजयः कौरव-
	पाण्डव सैनिकोंका घोर युद्धः अभिमन्युरे
	चित्रसेनकी, द्रोणसे द्रुपदकी और भीमसेनसे
	बाह्यीककी पराजय तथा सात्यिक और भीष्म-
1515,670	का युद्ध ३०२७
	१०५-दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके
	लिये आदेश, युधिष्ठिर और नकुल-सहदेवके
	द्वारा शकुनिकी घुड्सवार-सेनाकी पराजय
	तथा शस्यके साथ उन सबका युद्ध *** ३०३०
	१०६-भीभ्मके द्वारा पराजित पाण्डवसेनाका पलायन
	 और भीष्मको मारनेके लिये उद्यत हुए
	श्रीकृष्णको अर्जुनका रोकना · · : ३०३२
	१०७ नवें दिनके युद्धकी समाप्तिः रातमें पाण्डवोंकी
	गुप्त मन्त्रणा तथा भीकृष्णस हित पाण्डवीं का
3008	भीष्मते मिलकर उनके वधका उपाय जानना ३०३८
	२९६० २९६४ २९६४ २९७२ २९७५ २९८५ २९८७ २९९३

१०८-दसर्वे दिन उभयपक्षकी सेनाका रणके लिये	११६-कौरव-पाण्डव-महार्थियोंके द्वन्द्वयुद्धका वर्णन
प्रस्थान तथा भीष्म और शिखण्डीका समागम	तथा भीष्मका पराक्रम ३०६९
एवं अर्जुनका शिलण्डीको भीष्मका वध	११७-उभय पक्षकी सेनाओंका युद्धः दुःशासनका
ा करनेके लिये उत्साहित करना " ३०४५	पराक्रम तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मका
१०९-भीष्म और दुर्योधनका संवाद तथा भीष्मके	मूर्च्छित होना २०७४
द्वारा लाखों सैनिकोंका संहार ३०४९	११८-भीष्मका अद्भुत पराक्रम करते हुए पाण्डव-
११०-अर्जुनके प्रोत्साइनसे शिखण्डीका भीष्मपर	सेनाका भीषण संहार ३०७८
आक्रमण और दोनों सेनाओंके प्रमुख वीरोंका	११९-कौरवपक्षके प्रमुख महारथियों द्वारा सुरक्षित
परस्पर युद्ध तथा दुःशासनका अर्जुनके साथ	होनेपर भी अर्जुनका भीष्मको रथसे गिरानाः
घोर युद्ध · · · ३०५१	शरशय्यापर स्थित भीष्मके समीप इंसरूप-
१११-कौरव-पाण्डवपक्षके प्रमुख महारिययोंके	धारी ऋषियोंका आगमन एवं उनके कथन-
इन्द्र युद्धका वर्णन २०५४	से भीष्मका उत्तरायणकी प्रतीक्षा करते हुए
११२-द्रोणाचार्यका अश्वत्थामाको अग्रुभ शकुनोंकी	प्राण धारण करना ३०८२
स्चना देते हुए उसे भीष्मकी रक्षाके लिये	१२०-भीष्मजीकी महत्ता तथा अर्जुनके द्वारा भीष्म-
भृष्टयुम्रसे युद्ध करनेका आदेश देना ३०५८	को तिकया देना एवं उभय पक्षकी सेनाओं-
११३-कौरवपक्षके दस प्रमुख महारिययोंके साथ	का अपने शिविरमें जाना और श्रीकृष्ण-
अकेले घोर युद्ध करते हुए भीमसेनका	युधिष्ठिर-संवाद
अद्भुत पराक्रम · · · ३०६१	१२१-अर्जुनका दिव्य जल प्रकट करके भीष्मजीकी
११४-कौरवपक्षके प्रमुख महारयियोंके साथ युद्धमें	्यास बुझाना तथा भीष्मजीका अर्जुनकी
भीमसेन और अर्जुनका अद्भुत पुरुषार्थ · · १०६४	प्रशंसा करते हुए दुर्योधनको संधिके लिये
११५-भीष्मके आदेशसे युधिष्ठिरका उनपर आक्रमण	समझाना ३०९३
तथा कौरव-पाण्डव-सैनिकॉका भीषण युद्ध ३०६७	१२२-भीष्म और कर्णका रहस्यमय संवाद ३०९७

चित्र-सूची

(तिरंगा)			१०-भक्तोंके द्वारा प्रेमसे दिये हुए पत्र, पुण	प, দল <u>্</u> ড	
१-संजयको दिव्य दृष्टि	•••	•••	२५४६	जल आदिको भगवान् प्रत्यक्ष प्रका	ट होकर	
र-द्रोणाचार्यके प्रति दुर्यो				ग्रहण करते हैं · · ·	***	२६८६
कासैन्य प्रदर्शन			२५९७	११-पुण्यात्मा ब्राह्मण सुतीक्ष्ण	• • •	२६८९
३-देवताओं और मनुष्यो	को			१२-राजर्षि अम्बरीघ		२६८९
प्रजापतिकी शिक्षा	***		ne o	१३-भगवान्की प्रहाद आदि तीन		
			२६१४	विभृतियाँ		8008
४-सूर्यके प्रति नारायणका	उपदेश	-50%	२६२३	१४-भगवान् विष्णु		२७२४
५-समदर्शिता	•••	•••	२६४०	१५-भगवान् श्रीकृष्ण और		4948
६-सबमें भगवद्-दर्शन		;	२६५३	mana ann fran		
 अर्थार्थी भक्त ध्रुव 			? 4 4 5	अधुनक साथ ।वजयः विभूतिः नीति और श्री		२८१२
८-आर्तभक्त द्रौपदी	* * *	:	२६६२	१६-भीष्मपितामहपर भगवान् श्रीकृष्ण-		1011
९-ओमित्येकाक्षरं त्रक्ष	•••	:	२६६८	की कृपा	***	२८१३